दिनकर की सामाजिक चेतना

रामधारी सिंह दिनकर छायावादोत्तर हिन्दी कविता के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। दिनकर की कविता में सामाजिकता का स्वरूप प्रारंभिक काल से ही मिलता है। उनकी रचना रेणुका, हुंकार, कुरुक्षेत्र, विपथगा, द्वन्द्वगीत, रसवन्ती इत्यादि रचनाओं में सामाजिक चेतना के आयाम मिलते हैं। उनकी पहली प्रतिबद्धता जनता के प्रति है। वे राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ सामाजिक चेतना के कवि हैं। उनकी काव्य रचनाओं में किसान, मजदूर, विधवा और स्त्री समस्याएँ अत्यधिक मुखर हो उठती हैं। वहाँ जनता की बदहाली, विकास, ~~सम~~ सामाजिक विसंगतियाँ और उनकी आर्थिक असमानताएँ चित्रित हैं। उनकी कविता में गरीबी से बदहाल किसान, उपेक्षित स्त्रियाँ, अछूत समाज और दंगा पीड़ित भारतीय जनता है। उन्होंने देश की आजादी के बाद आने वाली चुनौतियों की भी याद ~~दिला~~ दिलायी। वह चुनौती थी देश के विकास का और समाज में आर्थिक समानता का। आजादी तो मिली पर कांग्रेसी नेताओं का आचरण देखकर उन्हें गहरा मोहभंग हुआ। उन्हें लगा कि आजादी मात्र खादी और टोपी तक सीमित रह गई है और जनता की जरूरतें पूरी नहीं हो रही हैं— " आजादी खादी के कुरते की एक बटन
आजादी टोपी, एक नुकीली तनी हुई।"

उनकी 'हाहाकार', 'विपथगा' इत्यादि शीर्षक कविताओं में किसान, विधवा और स्त्रियों की उपेक्षा की त्रासदी भी अभिव्यक्त हुई है। इस दृष्टि से उनकी 'हाहाकार' शीर्षक कविता काफी उल्लेखनीय है। जो किसानों की पीड़ा को वाणी देता है-

"जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम
नहीं है,
छूटे कभी संग बैलों का, ऐसा कोई याम
नहीं है।
मुख में जीभ, शक्ति भुज में, जीवन में सुख
का नाम नहीं है,
वसन कहाँ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों
शाम नहीं है।"

वे समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता देखकर विचलित हो जाते हैं। एक तरफ पानी सा पैसा बहाया जाता है। पूँजीपतियों के कुत्ते दूध-से नहलाए जाते हैं, तो दूसरी तरफ किसान, मजदूरों के बच्चे कुपोषित हो रहे हैं-

"श्वानों को मिलता दूध वस्त्र,
भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर,
जाड़ों की रात बिताते हैं।
पापी महलों का अंहकार
देता तब मुझको आमंत्रण।"

~~विषक~~ **निष्कर्षत:** उनकी कविताएँ सामाजिक जीवन की समस्या को परत-दर-परत खोलती है।

Scanned with CamScanner